

साप्ताहिक

अचलेश्वर एक्सप्रेस

संपादक : आकाश कुशवाह:- 8435500216

वर्ष-1 अंक-07

| ज्वालियर, सोमवार 05 अक्टूबर 2026 | पृष्ठ 8, मूल्य 2 रुपये

RNI No. - MPHIN/26/A/7091

मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ 3 दिन में तीन प्रदर्शन

ज्ञानेश कुमार के खिलाफ उद्धव-राज ठाकरे का मुंबई में प्रदर्शन, दिल्ली में भी आप, छात्र संगठन सड़क पर उतरे

एजेंसी, नई दिल्ली

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ रविवार को मुंबई में उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे ने संयुक्त प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में हजारों लोग शामिल हुए। दोनों नेताओं ने मेट्रो स्टेशन से शुरू होकर महानगरपालिका भवन तक मार्च निकाला।

उद्धव की शिवसेना यूबीटी और राज ठाकरे की मनसे पार्टी ने चुनावी प्रक्रिया में गड़बड़ी का आरोप लगाते हुए ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग की है। राज ठाकरे ने कहा कि महाराष्ट्र में हुए विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को रद्द किया जाए। सरकार किसकी बनेगी, ये फैसला जनता को तय करना है, चुनाव आयोग को नहीं। वहीं उद्धव बोले कि ज्ञानेश कुमार भाजपा का हथियार हैं।

मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ देश में पिछले तीन दिनों में दो शहरों में तीन बड़े प्रदर्शन हो चुके हैं। उसके अलावा अलग-अलग संगठन और पार्टियां भी विरोध मार्च निकाल चुकी हैं।

मुंबई पुलिस के अनुसार, आज के विरोध मार्च के आयोजकों के खिलाफ आजाद मैदान पुलिस स्टेशन में बिना इजाजत मार्च निकालने के आरोप में मामला दर्ज किया गया है।



राज ठाकरे बोले- एसआईआर प्रक्रिया रद्द हो, हमारा किसी से व्यक्तिगत विरोध नहीं

महाराष्ट्र में एसआईआर प्रक्रिया रद्द की जाए: हमारी मांग है कि महाराष्ट्र में की गई पूरी एसआईआर प्रक्रिया रद्द की जाए। कानून के मुताबिक, एसआईआर किसी आपात स्थिति में की जाती है। विधानसभा चुनाव के दौरान 40 से 60 लाख मतदाताओं के नाम जोड़े गए और इसके जरिए सत्ता हासिल की गई। अब एसआईआर के जरिए 2 करोड़ लोगों को हटाया जा रहा है। ये 2 करोड़ मतदाता कौन हैं? हमारी किसी से व्यक्तिगत नाराजगी नहीं है: हमारा विरोध इस बात को लेकर है कि आप सरकार कैसे चला रहे हैं और सत्ता का इस्तेमाल किस तरह कर रहे हैं। सरकार कौन बनाएगा और सरकार कैसे चलेगी, इसका फैसला जनता और मतदाताओं को करना चाहिए। इसका फैसला चुनाव आयोग को नहीं करना चाहिए।

एसआईआर को लेकर ज्ञानेश और चुनाव आयोग पर सवाल

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और चुनाव आयोग पर एसआईआर को लेकर सवाल खड़े हुए हैं। इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक चुनाव आयुक्त सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी ने एसआईआर से जुड़े फैसलों और आदेशों पर रिकॉर्ड में कम से कम 14 बार आपत्ति जताई थी। दावा है कि कई फैसले और आदेश संधू और जोशी की जानकारी या सिफारिश के बिना जारी किए गए। इसके बाद से विपक्ष ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग करते हुए देशभर में प्रदर्शन कर रहा है।



10 अक्टूबर को कॉकरोच पार्टी का दिल्ली में प्रदर्शन

सीजेपी संस्थापक अभिजीत दीपके ने 2 अक्टूबर को कहा कि ज्ञानेश कुमार ने इस्तीफा नहीं दिया तो 10 अक्टूबर को पूरे देश से कॉकरोच दिल्ली पहुंचेंगे। दीपके ने लिखा- अगर दिल्ली पुलिस हमें रोकने की कोशिश करती है, तो जहां वे हमें रोकेंगे, वहीं हमारा जंतर-मंतर होगा। हमारा आंदोलन शांतिपूर्ण होगा। हम महात्मा गांधी के दिखाए रास्ते पर चलेंगे।

उद्धव बोले- मेरा सवाल चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति पर है

करोड़ों लोगों के नाम मतदाता सूची से हटाए गए: देशभर में 13 करोड़ लोगों के नाम मतदाता सूची से हटा दिए गए हैं। बंगाल और तमिलनाडु में भी मतदाताओं के नाम हटाए गए हैं। पश्चिम बंगाल में अभी उपचुनाव हो रहा है और लोग अपने वोट देने के अधिकार की मांग को लेकर सुप्रीम कोर्ट पहुंचे हैं। सुप्रीम कोर्ट कहता है कि यह सिर्फ उपचुनाव है, इससे क्या फर्क पड़ता है? यह भी अभी तय नहीं है कि कल सुनवाई होगी या नहीं। चुनाव आयुक्त की नियुक्ति चुनाव से होनी चाहिए: चुनाव आयोग की नियुक्ति चुनाव के जरिए होनी चाहिए। पहले एक समिति होती थी, जिसमें भारत के मुख्य न्यायाधीश, प्रधानमंत्री और विपक्ष के नेता शामिल होते थे। उन्होंने (केंद्र सरकार ने) इस समिति से मुख्य न्यायाधीश को हटा दिया। उनकी जगह प्रधानमंत्री द्वारा चुने गए एक मंत्री को नियुक्त किया गया।

लखनऊ में 40 हजार घरों में पानी घुसा, बिहार के 466 गांवों में बाढ़ म्यांमार से आने वाली ड्रग्स का गेटवे बना मिजोरम

एमपी में 7 अक्टूबर से बारिश का अनुमान

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश में 9 दिनों से बारिश नहीं हुई, लेकिन बांधों से छोड़े गए पानी के कारण 11 जिलों में 10 नदियां खतरे के निशान से ऊपर हैं। लखनऊ के 40 हजार घरों में गोमती नदी का पानी घुस गया। 10 हजार लोग सुरक्षित जगहों पर चले गए हैं। गलियों में नावें चल रही हैं। गोमती रिवर फ्रंट को अगले आदेश तक बंद कर दिया गया है।

बिहार में 6 जिलों के करीब 466 गांवों में बाढ़ है। करीब 8 लाख लोग प्रभावित हुए हैं। 92,730 लोगों को

सुरक्षित जगहों पर पहुंचाया गया है। बाढ़ से जुड़ी घटनाओं में अब तक 27 लोगों की मौत हो चुकी है। सारण में सबसे ज्यादा 3.55 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हैं और 44 हजार लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। मध्य प्रदेश में मानसून की विदाई के बाद दिन में गर्मी और रात में ठंड बढ़ गई है। पिछले 3 दिनों में रात का तापमान 4एच तक गिरा है। अमरकंटक में तापमान 16एच और इंदौर में 18एच पहुंच गया। मौसम विभाग ने 7 से 9 अक्टूबर के बीच 14 शहरों में बारिश का अनुमान जताया है।

म्यांमार, नई दिल्ली

मिजोरम म्यांमार से आने वाली ड्रग्स का गेटवे बनता जा रहा है। 510 किमी लंबी खुली सीमा का फायदा उठाकर तस्करी जंगलों और सीमावर्ती गांवों से हेरोइन और मेथामफेटामाइन भारत ला रहे हैं। बीते 8 माह में 846 करोड़ रुपए से ज्यादा की ड्रग्स जब्त हुई और 930 लोगों को गिरफ्तार किया गया। इनमें 111 विदेशी भी शामिल हैं। ईडी की ताजा कार्रवाई में म्यांमार के सरगना थिंगचुंगआंग उर्फ चिंतुआंग से जुड़े 22 बैंक खातों से 4.8 करोड़ रुपए कुर्क किए गए। जांच में सामने आया कि नेटवर्क ड्रग्स की खरीद, सीमा पार परिवहन, स्टोरेज, देश के भीतर सप्लाय और हवाला के जरिए भुगतान तक नियंत्रित कर रहा था।

8 माह में 846 करोड़ की ड्रग्स जब्त; 930 गिरफ्तार, इनमें 111 विदेशी



दोतरफा चेन: भारत से जाता था कच्चा माल, ड्रग्स म्यांमार से

तस्करी नेटवर्क सिर्फ म्यांमार से भारत में ड्रग्स भेजने तक सीमित नहीं था। भारत, खासकर गुजरात से

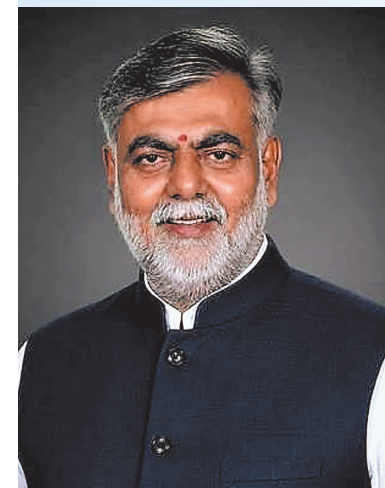
स्यूडोएफेड्रिन टैबलेट और कैफीन एन्हाइड्रस जैसे केमिकल मिजोरम के रास्ते म्यांमार पहुंचाए जाते थे। इनका इस्तेमाल वहां का अवैध लैब में ड्रग्स बनाने में होता था। इसके बाद तैयार ड्रग्स फिर मिजोरम के रास्ते भारत में

लाई जाती थीं। ईडी की पिछली जांच में प्रिक्सर केमिकल की करोड़ों की सप्लाय और हवाला लेन-देन के लिंक भी सामने आए हैं।

हवाला, म्यूल खाते और फ्रंट कंपनियों से चलता था कारोबार: ड्रग्स की कमाई छिपाने और एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने के लिए नेटवर्क ने कई स्तर बनाए थे। अलग-अलग लोगों और फ्रंट कंपनियों के नाम पर दर्जनों बैंक खाते खोले गए। इनमें रकम तेजी से दूसरे खातों में ट्रांसफर की जाती थी। कई म्यूल खातों का इस्तेमाल सिर्फ पैसा घुमाने के लिए होता था। हवाला नेटवर्क के जरिए भी भुगतान किया जाता था, ताकि रकम का असली स्रोत पकड़ना मुश्किल हो।

संगठन से लेकर जनता तक उठ रहे सवाल, 2028 से पहले रणनीति बदलने की जरूरत

मुख्यमंत्री बदलें अपने सलाहकार, बढ़ते विरोध पर लगे ब्रेक



अचलेश्वर एक्सप्रेस

भोपाल। मध्यप्रदेश की राजनीति में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व को लेकर उठते सवाल अब केवल विपक्ष तक सीमित नहीं दिखते। राजनीतिक हलकों में संगठन, सरकार, मंत्रियों और जनता के बीच सरकार की कार्यशैली को लेकर अलग-अलग स्तर पर चर्चा लगातार तेज हो रही है। ऐसे माहौल में सबसे बड़ा सवाल यह है कि मुख्यमंत्री तक जमीनी फीडबैक किस तरह पहुंच रहा है?

क्या मुख्यमंत्री को मिलने वाली सलाह समय पर और सही दिशा में है? क्या सरकार के फैसलों के राजनीतिक प्रभाव का पर्याप्त आकलन किया जा रहा है? जातिगत समीकरण हों, किसी व्यक्ति विशेष से जुड़े विवाद हों, योजनाओं का क्रियान्वयन हो या भ्रष्टाचार के आरोप-हर मुद्दे पर सरकार को सफाई देनी पड़ती है तो रणनीति पर सवाल उठना स्वाभाविक है।

ऐसे में मुख्यमंत्री को अपने सलाहकार तंत्र की समीक्षा करनी चाहिए। जरूरत हो तो ऐसे लोगों को जिम्मेदारी दी जाए जो सरकार के साथ-साथ संगठन और जनता की नब्ज भी समझते हों। क्योंकि 2028 अभी दूर जरूर है, लेकिन राजनीतिक तैयारी आज से ही शुरू होती है।



संगठन में विरोध क्यों? मुख्यमंत्री तक सही फीडबैक पहुंच रहा है या नहीं?

भोपाल। किसी भी राजनीतिक सरकार के लिए सबसे मजबूत सुरक्षा कवच उसका संगठन होता है। लेकिन जब सरकार के फैसलों को लेकर संगठन के स्तर पर ही असहमति या नाराजगी की चर्चाएं सामने आने लगें तो नेतृत्व को आत्ममंथन करना चाहिए। मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के सामने भी यही सवाल खड़ा हो रहा है। राजनीतिक विश्लेषकों के बीच चर्चा है कि सरकार और संगठन के बीच संवाद कितना प्रभावी है और जमीनी कार्यकर्ताओं की बात मुख्यमंत्री तक कितनी

भाजपा के भीतर उठते सवालों को नजरअंदाज करना भविष्य के लिए पड़ सकता है भारी

जरूरत है। सलाहकारों और रणनीतिक टीम की भूमिका यहां महत्वपूर्ण हो जाती है। सही सलाह का मतलब केवल सरकार की उपलब्धियां बताना नहीं, बल्कि संभावित राजनीतिक नुकसान की चेतावनी समय रहते देना भी है।

तेजी से पहुंच रही है। यदि किसी निर्णय के बाद लगातार सफाई देनी पड़े या पार्टी के भीतर से ही सवाल उठें, तो समस्या केवल विपक्ष की राजनीति नहीं मानी जा सकती। मुख्यमंत्री को संगठन के फीडबैक सिस्टम को मजबूत करने की जरूरत है।



मंत्री भी सवाल उठाएं तो मुख्यमंत्री को सुननी चाहिए जमीन की आवाज

भोपाल। मुख्यमंत्री और मंत्रिमंडल के बीच बेहतर समन्वय किसी भी सरकार के लिए जरूरी होता है। मध्यप्रदेश में समय-समय पर मंत्रियों और नेताओं की ओर से अलग-अलग मुद्दों पर सामने आने वाली नाराजगी ने राजनीतिक चर्चा को जरूर हवा दी है। ऐसे में सवाल यह है कि क्या सरकार के भीतर संवाद की व्यवस्था उतनी प्रभावी है, जितनी होनी चाहिए? मंत्री केवल विभाग चलाने वाले चेहरे नहीं होते, वे अपने-अपने क्षेत्रों और कार्यकर्ताओं की राजनीतिक नब्ज से भी जुड़े रहते हैं। इसलिए

सरकार के भीतर से आने वाले संकेतों को नजरअंदाज करना 2028 में महंगा पड़ सकता है

यदि किसी मंत्री या वरिष्ठ नेता की ओर से कोई असहमति सामने आती है तो उसे केवल विरोध मानने के बजाय फीडबैक के रूप में देखना चाहिए। यही वह जगह है जहां मुख्यमंत्री के सलाहकारों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। सलाहकारों को मुख्यमंत्री तक सिर्फ सकारात्मक रिपोर्ट नहीं, बल्कि सरकार के प्रति असंतोष, स्थानीय नाराजगी और राजनीतिक जोखिम की वास्तविक तस्वीर भी पहुंचानी चाहिए। 2028 के चुनाव से पहले यह सुधार जितना जल्दी होगा, उतना ही सरकार के लिए बेहतर होगा।

15 साल शिवराज ने सरकार चलाई, फिर विरोध इतना बड़ा क्यों नहीं दिखा?

भोपाल। मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को लेकर उठते राजनीतिक सवालों की तुलना पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के लंबे कार्यकाल से भी की जा रही है। शिवराज सरकार के खिलाफ भी विपक्ष ने लगातार मुद्दे उठाए और कई मौकों पर राजनीतिक विरोध हुआ, लेकिन उनकी सरकार ने लंबे समय तक संगठन, कार्यकर्ताओं और जनता के साथ संवाद की मजबूत राजनीतिक शैली विकसित की। यही तुलना

अब डॉ. मोहन यादव के सामने खड़े सवालों को और महत्वपूर्ण बनाती है। क्या समस्या फैसलों में है या फैसलों को समझाने और जमीन तक पहुंचाने की रणनीति में? क्या सरकार की उपलब्धियां उतनी प्रभावी तरीके से जनता तक पहुंच रही हैं, जितनी पहुंचनी चाहिए? मुख्यमंत्री को इस अंतर का विश्लेषण करना होगा। पुराने मॉडल की

डॉ. मोहन यादव सरकार के सामने सबसे बड़ा सवाल-संचार और राजनीतिक प्रबंधन में कहां रह गई कमी?

सलाहकार तंत्र की समीक्षा इसी दिशा में पहला कदम हो सकती है।

हबहु नकल जरूरी नहीं, लेकिन उससे यह सीख जरूर ली जा सकती है कि जनता, संगठन और कार्यकर्ताओं से लगातार संवाद सरकार के लिए कितना जरूरी है।

साप्ताहिक अवकाश सिर्फ छुट्टी नहीं, बेहतर पुलिसिंग की जरूरत है

पुलिस को भी चाहिए एक दिन अपना

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। पुलिस की ड्यूटी घड़ी देखकर खत्म नहीं होती। कानून-व्यवस्था से लेकर अपराध नियंत्रण, वीआईपी ड्यूटी, त्योहार, चुनाव, जुलूस और आपात परिस्थितियों में पुलिसकर्मी लगातार अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं। ऐसे में सवाल यह नहीं कि पुलिसकर्मी को छुट्टी क्यों चाहिए, बल्कि सवाल यह है कि जिस जवान से हर समय ड्यूटी के लिए तैयार रहने की अपेक्षा की जाती है, उसके आराम और परिवार के लिए व्यवस्था कितनी तैयार है?

साप्ताहिक अवकाश की व्यवस्था को लेकर पहले भी प्रयास और दिशा-निर्देश सामने आते रहे हैं। अब आवश्यकता इस बात की है कि यह व्यवस्था केवल कागजों और घोषणाओं तक सीमित न रहे, बल्कि थाना स्तर तक एक नियमित, पारदर्शी और व्यावहारिक रोस्टर के रूप में दिखाई दे।

मुख्यमंत्री और डीजीपी करें व्यवस्था की समीक्षा



मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाना के स्तर से यदि साप्ताहिक अवकाश व्यवस्था की प्रदेव्यापी समीक्षा कराई जाए, तो पुलिसकर्मीयों के लिए यह एक सकारात्मक पहल साबित हो सकती है। व्यवस्था ऐसी हो जिसमें किसी थाने या इकाई का काम प्रभावित किए बिना कर्मचारियों को रोटेसन के आधार पर सप्ताह में एक दिन अवकाश दिया जा सके। थाना प्रभारी से लेकर वरिष्ठ अधिकारियों तक के लिए स्पष्ट रोस्टर हो और विशेष परिस्थितियों में बदलाव की प्रक्रिया भी पहले से तय हो।



एक दिन का आराम, कई दिनों की बेहतर ड्यूटी

लगातार काम करने वाला पुलिसकर्मी भी आखिर इंसान है। उसे भी अपने परिवार के साथ बैठने, बच्चों से मिलने, माता-पिता का हाल जानने और मानसिक रूप से खुद को तैयार करने के लिए समय चाहिए। साप्ताहिक अवकाश पुलिसिंग को कमजोर नहीं करता, बल्कि पुलिसकर्मी को लंबे समय तक बेहतर तरीके से काम करने के लिए तैयार करता है। जरूरत इस बात की है कि इसे किसी कर्मचारी की व्यक्तिगत मांग के बजाय पुलिस प्रशासन की मानव संसाधन नीति का हिस्सा माना जाए।

अचलेश्वर एक्सप्रेस का सवाल— क्या रक्षक के लिए भी बनेगा रोस्टर?

पुलिसकर्मी से हम हर परिस्थिति में तत्पर रहने की उम्मीद करते हैं। फिर क्या व्यवस्था यह सुनिश्चित नहीं कर सकती कि उसी पुलिसकर्मी को सप्ताह में कम से कम एक दिन ऐसा मिले, जब वह बिना किसी अनिश्चितता के अपने परिवार के साथ समय बिता सके? अचलेश्वर एक्सप्रेस की अपील है कि मुख्यमंत्री, गृह विभाग और पुलिस मुख्यालय इस विषय को गंभीरता से संज्ञान में लेकर प्रदेश के थानों और पुलिस इकाइयों में साप्ताहिक अवकाश की वास्तविक स्थिति की समीक्षा करें। क्योंकि मजबूत पुलिस व्यवस्था केवल अधिक ड्यूटी से नहीं बनती— बेहतर आराम, बेहतर मनोबल और बेहतर कार्य-प्रबंधन भी मजबूत पुलिसिंग की पहचान हैं।

जेन-जी पर विचार न थोपें, मार्गदर्शन करें : तोमर

भारत की युद्ध रोकने की कूटनीतिक पहल ने रुस-यूक्रेन का ध्यान खींचा

यूक्रेन के विदेश मंत्री ने भारत के प्रस्ताव को संतुलित और व्यावहारिक बताया



नई दिल्ली, (ए)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जैसे बड़े नेता युद्ध रोकने में नाकाम रहे, वहीं भारत की कूटनीतिक पहल ने दोनों देशों का ध्यान आकर्षित किया है। यूक्रेन के विदेश मंत्री एंड्री सिबिहा ने भारत के युद्धविराम प्रस्ताव को अमेरिका, तुर्की और मित्र द्वारा दिए गए प्रस्तावों में सबसे संतुलित, प्रभावी और व्यावहारिक बताया है। यूक्रेन अब अपने ऊर्जा ठिकानों और काला सागर में हमलों को रोकने की शर्त पर युद्धविराम के लिए तैयार है, जिसके लिए रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोडिमिर जेलेन्स्की के बीच सीधी मुलाकात हो सकती है। पुतिन पहले ही पीएम मोदी के विचारों की सार्वजनिक रूप से प्रशंसा कर चुके हैं।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक कीव में एंड्री सिबिहा ने कहा कि भारत का सीजफायर प्रस्ताव सबसे ठोस है और यह पहला मौका है जब भारत ने इस संघर्ष में सीधी मध्यस्थ की भूमिका निभाने के संकेत दिए हैं। यूक्रेन ने रूस के साथ शांति वार्ता के लिए अपनी शर्तें रखी हैं। पहला- रूस उसके बिजली स्टेशनों और ऊर्जा इंफ्रास्ट्रक्चर पर मिसाइल हमले पूरी तरह रोकें। दूसरा- काला सागर के समुद्री मार्ग पर जहाजों की आवाजाही को पूरी तरह सुरक्षित किया जाए। यूक्रेनी विदेश मंत्री का मानना है कि इन शर्तों पर संपर्क रेखा पर युद्धविराम तभी संभव है जब पुतिन और जेलेन्स्की आमने-सामने बैठें और भारत का प्रस्ताव इसी सीधी मुलाकात का मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

विधानसभा अध्यक्ष बोले- जेन-जी को 'तरुण भारत' कहना ज्यादा उपयुक्त; देश को आगे ले जाने की इस पीढ़ी में अपार क्षमता

इंदौर (ए)। मध्यप्रदेश विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि जेन-जी को 'तरुण भारत' कहना ज्यादा उपयुक्त है। यह पीढ़ी जागरूक और ऊर्जावान है तथा देश को आगे ले जाने की इसमें अपार क्षमता है। इसलिए इस पीढ़ी पर अपने विचार थोपने के बजाय अनुभवी लोगों को इसका मार्गदर्शन करना चाहिए।

तोमर रविवार को स्टेट प्रेस क्लब, मद्रास द्वारा जाल सभागृह में आयोजित तीन दिवसीय भारतीय पत्रकारिता महोत्सव के समापन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जेन-जी दुनिया की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। आईटी कंपनियों, अनुसंधान केंद्रों, प्रबंधन संस्थानों और स्टार्टअप के क्षेत्र में युवा नेतृत्व बढ़ रहा है। मध्यप्रदेश में संचालित हजारों स्टार्टअप की कमान भी युवाओं के हाथों में है।



:: पत्रकारिता सिर्फ खबर लिखने तक सीमित नहीं ::

तोमर ने कहा कि मीडियाकर्मियों का काम केवल समाचार लिखना नहीं है, बल्कि देश और समाज से जुड़े मुद्दों के विभिन्न पहलुओं पर चिंतन करना भी जरूरी है। उन्होंने भारतीय पत्रकारिता महोत्सव को देशभर के श्रेष्ठ मीडियाकर्मियों के

अनुभवों से सीखने का बेहतर मंच बताया। प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया से जुड़े पत्रकारों को ऐसे आयोजनों का लाभ उठाना चाहिए।

इंदौर में पत्रकारिता के साथ कला-संस्कृति की भी समृद्ध परंपरा

उन्होंने कहा कि इंदौर पत्रकारिता

के साथ साहित्य, संगीत, कला, संस्कृति और स्वच्छता के क्षेत्र में भी समृद्ध है। ऐसे शहर में भारतीय पत्रकारिता महोत्सव का आयोजन यहां की पत्रकारिता की सक्रिय परंपरा को दर्शाता है। इंदौर देश के सबसे स्वच्छ शहरों में अपनी पहचान बना चुका है और अन्य क्षेत्रों में भी लगातार आगे बढ़ रहा है।

कार्यक्रम में विधायक मनोज पटेल, शिक्षाविद स्वप्निल कोठारी तथा वरिष्ठ पत्रकार गौतम लाहिड़ी, प्रवीण खारीवाल, मनोहर लिम्बोदिया, सुदेश तिवारी, नवनीत शुक्ला और शिशिर सिन्हा सहित अन्य लोग मौजूद रहे। तोमर ने 'इंदौर का पत्रकारिता घराना' पुस्तक का विमोचन किया तथा फेडरेशन ऑफ क्लब की राष्ट्रीय कार्यसमिति के सदस्यों को सम्मानित किया। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में पुरस्कृत छायाचित्रों और कार्टून प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया।

छात्र की मौत के बाद शिक्षण संस्थानों में बदलाव, विदेशों में भी हुए हैं बदलाव

हमें ऐसी व्यवस्थाएं करनी होंगी, जहां छात्र की बात सुनी और समझी जा सके

नई दिल्ली, (ए)। विद्यार्थियों की आत्महत्या रोकने के लिए भारतीय शिक्षण संस्थान स्प्रिंग लगे 'आत्महत्या रोधी' पंखे लगवा रहे हैं, तो कहीं पंखों को जाली से ढका जा रहा है और कुछ संस्थान छत की जगह दीवार वाले पंखे लगा रहे हैं। इन कदमों को भले ही 'तात्कालिक उपाय' कहकर आलोचना का सामना करना पड़ रहा हो, लेकिन कई विदेशी विश्वविद्यालय भी पहले ऐसे भौतिक बदलाव कर चुके हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका के ह्यूस्टन विश्वविद्यालय ने परिसर में आत्महत्या की दो घटनाओं के बाद 2023 में अपने बुनियादी ढांचे में कई बदलाव किए थे जिसके तहत इमारत के चारों ओर सुरक्षा बाड़ लगाने के साथ-साथ ऊपरी मंजिल के छज्जों, अंदरूनी सीढ़ियों और इमारतों को जोड़ने वाले खुले गलियारों को अस्थायी अवरोध लगाकर सुरक्षित किया था। घटना के बाद विश्वविद्यालय ने 'एग्नेस अर्नोल्ड हॉल टास्कफोर्स' का गठन किया और तीन चरणों में इमारत के नवीनीकरण का काम शुरू किया। अमेरिका के कॉर्नेल विश्वविद्यालय में भी 2009-10 के शैक्षणिक सत्र के दौरान आत्महत्या की सिलसिलेवार घटनाओं ने परिसर की सुरक्षा व्यवस्था में बदलाव जरूरी कर दिया था।

रिपोर्ट के मुताबिक एक महीने के अंदर विश्वविद्यालय के तीन छात्रों ने 'ईस्ट हिल' के पुलों से या उनके आसपास से कूदकर



आत्महत्या कर ली थी। इसके बाद परिसर के आसपास की गहरी खाइयों पर बने पुलों पर स्टील की सुरक्षा जालियां लगाई गईं। बाद में विश्वविद्यालय ने आठ पुलों पर स्थायी अवरोध लगाए और कुछ खड़ी चट्टानों के किनारों पर भी बाड़ लगा दी। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के 'मीन्स मैटर' दिशानिर्देशों में भी आत्महत्या रोकने के उपायों के तहत घातक साधनों तक पहुंच सीमित करने की सिफारिश की गई है।

ऑक्सफोर्ड के वेडहम कॉलेज में छात्रों को खिड़कियों पर लगे अवरोधकों के साथ छेड़छाड़ करने की अनुमति नहीं है। इसके अलावा, छतों, मुंडेरों और छज्जों तक पहुंच प्रतिबंधित है। बालकनी पर सुरक्षा रेलिंग भी लगाई गई है। बता दें मुंबई आईआईटी के एक छात्र ने 18 सितंबर को परिसर में स्थित छात्रावास के कमरे में पंखे से लटककर आत्महत्या किए जाने की घटना के बाद विरोध-प्रदर्शन हुए थे। इस

घटना ने एक बार फिर छात्र आत्महत्याओं के मुद्दे को चर्चा के केंद्र में ला दिया है। चिंता संबंधी विकारों की विशेषज्ञ मनोचिकित्सक ने कहा कि घातक साधनों तक पहुंच सीमित करना डब्ल्यूएचओ की सिफारिशों का भी हिस्सा है, लेकिन इसे छात्रों को सार्थक सहयोग देने के विकल्प के तौर पर नहीं देखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि परिसर के भौतिक वातावरण में बदलाव पर जरूरत से ज्यादा जोर देने का खतरा यह है कि इससे मानसिक स्वास्थ्य के बड़े संकट से ध्यान हट सकता है। पंखे हटाने से अल्पावधि में कुछ जानें बच सकती हैं, लेकिन अगर हम वास्तव में छात्रों का साथ देना चाहते हैं तो हमें ऐसी व्यवस्थाएं करनी होंगी, जहां उन्हें लगे कि उनकी बात सुनी और समझी जा रही है और उनकी परवाह की जा रही है। अब समय आ गया है कि हम गंभीर समस्या पर महज तात्कालिक उपाय करना बंद करें।

हमें चाहिए न्यूज़ रिपोर्टर

अगर आपको सच दिखाने का जज़्बा है, तो जुड़िए अचलेश्वर एक्सप्रेस से...

स्थानीय खबरों को देने का है मौका

हम अपने दर्शकों तक सटीक, तेज और जिम्मेदार पत्रकारिता पहुंचाने के लिए प्रतिभाशाली और ऊर्जावान न्यूज़ रिपोर्टर की तलाश में हैं।

आवश्यक योग्यता

- संचार/मीडिया/पत्रकारिता में रुचि
- समाचार लेखन और फील्ड रिपोर्टिंग का अनुभव (अतिरिक्त योग्यता)
- ग्वालियर-चंबल संभाग और मध्य प्रदेश के स्थानीय मुद्दों की समझ
- अच्छी कम्प्युनिकेशन स्किल्स और टीम के साथ काम करने की क्षमता

अगर आपके अंदर है खबर की ताकत... तो बनिए हमारी टीम का हिस्सा!

अपना बायोडाटा और खबर से जुड़ा अनुभव हमें जरूर भेजें।

हमें आपसे क्या चाहिए?

- जुनून, मेहनत और जिम्मेदारी
- समय पर खबर देने की प्रतिबद्धता
- सकारात्मक सोच और सीखने की ललक
- स्थानीय मुद्दों पर पैनी नजर

क्या मिलेगा?

- आकर्षक मानदेय
- करियर ग्रोथ के अवसर
- प्रशिक्षण और मार्गदर्शन
- सुरक्षित और प्रोफेशनल वातावरण

अचलेश्वर एक्सप्रेस

सच की आवाज़, हर कदम आपके साथ

संपादकीय

भारतीय खिलाड़ियों का जापान में श्रेष्ठ प्रदर्शन

जापान के आइची-नागोया में आयोजित एशियन गेम्स 2026 में भारतीय खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए देश का नाम रोशन कर दिया। भारत ने प्रतियोगिता में कुल 85 पदक अपने नाम किए, जिनमें 21 स्वर्ण, 27 रजत और 37 कांस्य पदक शामिल हैं। इस प्रदर्शन के साथ भारत ने पदक तालिका में चौथा स्थान हासिल किया। इस तरह भारत ने एशिया के सबसे बड़े बहु-खेल आयोजनों में अपनी मजबूत स्थिति कायम रखी। 2023 में भारत ने 28 गोल्ड सहित 106 मेडल जीत कर पहली बार सारी दुनिया को चौंकाया था। 2026 में 2023 का रिकॉर्ड तो भारत नहीं तोड़ पाया लेकिन उसने जो सफलता प्राप्त की है भारत के लिए यह अभियान कई मायनों में अति महत्वपूर्ण रहा। अलग-अलग खेलों में खिलाड़ियों ने न केवल पदक जीते, बल्कि कई मुकाबलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए आने वाले अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों के लिए भी उम्मीदें बढ़ाई हैं। खास तौर पर निशानेबाजी, तीरंदाजी, एथलेटिक्स और कुश्ती में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन उल्लेखनीय रहा। एशियन गेम्स में भारत के खाते में कुल 21 स्वर्ण पदक आए। इनमें कई ऐसे मुकाबले रहे, जिनमें भारतीय खिलाड़ियों ने कड़े अंतर्राष्ट्रीय प्रतिद्वंद्वियों को चुनौती देते हुए शीर्ष स्थान हासिल किया। रजत पदकों की संख्या 27 और कांस्य पदकों की संख्या 37 रही। इस तरह भारत ने कुल 85 पदकों के साथ प्रतियोगिता में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई। विशेषज्ञों के अनुसार, भारतीय खेलों में पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह निशानेबाजी, तीरंदाजी, एथलेटिक्स और कुश्ती जैसे खेलों पर ध्यान बढ़ा है, उसका असर एशियन गेम्स के प्रदर्शन में भी दिखाई दिया है। निशानेबाजी भारत के लिए प्रमुख पदक दिलाने वाले खेलों में शामिल रही। भारतीय निशानेबाजों ने विभिन्न स्पर्धाओं में शानदार प्रदर्शन किया और महत्वपूर्ण पदक हासिल किए। वहीं तीरंदाजी में भी भारतीय खिलाड़ियों ने अपनी तकनीक, एकाग्रता और दबाव में प्रदर्शन करने की क्षमता का परिचय दिया। एथलेटिक्स में भी भारतीय खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

भारत की अर्थव्यवस्था का दोहरा इम्तिहान!

प्रतिस्पर्धा की व्यापक परीक्षा भी है।मौद्रिक नीति समिति की बैठक 5 से 7 अक्टूबर 2026 तक निर्धारित है।17 अक्टूबर को संभावित नीति निर्णय की तारीख के रूप में देखा जा रहा है। यटर्स की 28 सितंबर की रिपोर्ट में अर्थशास्त्रियों के सर्वेक्षण के आधार पर लगभग 60 प्रतिशत प्रतिभागियों ने 25 आधार अंक की वृद्धि की अपेक्षा व्यक्त की थी। यह सर्वेक्षण आधारित अपेक्षा है, आरबीआई का घोषित निर्णय नहीं।भारतीय रिजर्व बैंक (आरबी आई) 2027 की पहली छमाही तक ब्याज दरों में कुल 100 बेसिस पॉइंट (1 प्रतिशत अंक) की बढ़ोतरी कर सकता है। बैंक ऑफ अमेरिका (बोफा) सिक्योरिटीज ने अपनी पहली दर वृद्धि के अनुमान को दिसंबर से आगे बढ़ाकर अक्टूबर कर दिया है।अपनी ताजा इंडिया व्यूपॉइंट रिपोर्ट में बोफा सिक्योरिटीज ने कहा कि,उसे उम्मीद है कि आरबी आई 7 अक्टूबर को होने वाली मौद्रिक नीति समिति की बैठक में रेपो रेट में 25 बेसिस पॉइंट की बढ़ोतरी करेगा।इसके बाद 75 बेसिस पॉइंट की और बढ़ोतरी की उम्मीद है, जिससे अनुमानित अंतिम रेपो रेट 6.25 प्रतिशत तक पहुंच सकता है।

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनारी

वैश्विक अर्थव्यवस्था के बदलते परिदृश्य में शनिवार दिनांक 3 अक्टूबर 2026 का दिन भारत के लिए आर्थिक संभावनाओं और वित्तीय चुनौतियों का एक महत्वपूर्ण संगम प्रस्तुत कर रहा है। एक ओर भारत मुक्त व्यापार समझौतों के माध्यम से विश्व की लगभग 75 से 80 प्रतिशत अर्थव्यवस्था तक व्यापारिक पहुंच बनाने, बता दें भारत-न्यूजीलैंड मुक्त व्यापार समझौता 20 अक्टूबर 2026 से प्रभावी होने के लिए निर्धारित है।ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पशुपालन एवं सहकारिता से सशक्त करने और विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को गति देने की दिशा में आगे बढ़ रहा है,तो दूसरी ओर भारतीय शेयर बाजार की लगातार आठ सप्ताह की गिरावट,25 साल बाद गिरावट का सबसे लंबा दौर, 8 हफ्ते में 26 लाख करोड़रुपए डूबे।विदेशी मुद्रा भंडार में 18.34 अरब डॉलर की कमी,विदेशी निवेशकों की बिकवाली और भारतीय रिजर्व बैंक की संभावित ब्याज दर वृद्धि ने आर्थिक विमर्श को नई गंभीरता प्रदान की है।यह परिस्थितियां केवल शेयर सूचकांकों के उतार-चढ़ाव की कहानी नहीं हैं, बल्कि भारत की आर्थिक सहनशीलता, निवेशकों के विश्वास, मुद्रा स्थिरता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की व्यापक परीक्षा भी है।मौद्रिक नीति समिति की बैठक 5 से 7 अक्टूबर 2026 तक निर्धारित है।17 अक्टूबर को संभावित नीति निर्णय की



तारीख के रूप में देखा जा रहा है। यटर्स की 28 सितंबर की रिपोर्ट में अर्थशास्त्रियों के सर्वेक्षण के आधार पर लगभग 60 प्रतिशत प्रतिभागियों ने 25 आधार अंक की वृद्धि की अपेक्षा व्यक्त की थी। यह सर्वेक्षण आधारित अपेक्षा है, आरबीआई का घोषित निर्णय नहीं।भारतीय रिजर्व बैंक (आरबी आई) 2027 की पहली छमाही तक ब्याज दरों में कुल 100 बेसिस पॉइंट (1 प्रतिशत अंक) की बढ़ोतरी कर सकता है। बैंक ऑफ अमेरिका (बोफा) सिक्योरिटीज ने अपनी पहली दर वृद्धि के अनुमान को दिसंबर से आगे बढ़ाकर अक्टूबर कर दिया है।अपनी ताजा इंडिया व्यूपॉइंट रिपोर्ट में बोफा सिक्योरिटीज ने कहा कि,उसे उम्मीद है कि आरबी आई 7 अक्टूबर को होने वाली मौद्रिक नीति समिति की बैठक में रेपो रेट में 25 बेसिस पॉइंट की बढ़ोतरी करेगा।इसके बाद 75 बेसिस पॉइंट की और बढ़ोतरी की उम्मीद है, जिससे अनुमानित अंतिम रेपो रेट 6.25 प्रतिशत तक पहुंच सकता है।

साथियों, बात अगर हम वैश्विक व्यापार

में भारत की बढ़ती आर्थिक महत्वाकांक्षा को समझने की करें तो दिनांक 3 अक्टूबर 2026 को भारत के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री द्वारा मुक्त व्यापार समझौतों के माध्यम से वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की भागीदारी बढ़ाने पर दिया गया जोर आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। भारत का उद्देश्य केवल वस्तुओं का निर्यात बढ़ाना नहीं, बल्कि भारतीय उद्योगों,सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों, कृषि प्रसंस्करण, वस्त्र, औषधि और अभियांत्रिकी उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजारों में प्रतिस्पर्धी अवसर उपलब्ध कराना है।वैश्विक अर्थव्यवस्था के लगभग 75-80 प्रतिशत तक संभावित व्यापारिक पहुंच का लक्ष्य भारत की आर्थिक कूटनीति का एक महत्वपूर्ण आयाम है।हालांकि इस अवसर का वास्तविक लाभ तभी प्राप्त होगा जब भारतीय उत्पाद गुणवत्ता, मूल्य,तकनीक और समयबद्ध आपूर्ति के अंतरराष्ट्रीय मानकों पर खरे उतरेंगे।मुक्त व्यापार समझौतों का उद्देश्य बाजार खोलना है, लेकिन घरेलू उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता विकसित करना भी उतना ही आवश्यक है।

नशे में उड़ता पंजाब: बद अच्छा बदनाम बुरा

- तनवीर जाफ़री

पंजाब राज्य का भारतीय कृषि उत्पादन और देश की खाद्य सुरक्षा में सबसे अहम योगदान है। भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का मात्र 1.5% हिस्सा होने के बावजूद, पंजाब को भारत का अन्न भंडार और भारत की खाद्य टोकरी कहा जाता है। भारत सरकार द्वारा खरीदे जाने वाले कुल गेहूँ का लगभग 46% हिस्सा अकेले पंजाब से आता है। केंद्रीय पूल में जमा होने वाले कुल चावल के सरकारी उपार्जन में भी पंजाब का लगभग 31% योगदान है। देश के कुल खाद्यान्न उत्पादन में पंजाब 13 से 14 प्रतिशत का योगदान देता है। गेहूँ उत्पादन का लगभग 14% से 22% हिस्सा पंजाब में उगाता है, जो इसे देश के शीर्ष उत्पादकों में बनाए रखता है। इसी तरह पंजाब देश के चावल उत्पादन का लगभग 10% से 11% हिस्सा पैदा करता है। भारत के कुल दूध उत्पादन में भी पंजाब लगभग 6.2% से 10% का योगदान देता है। इसी तरह देश के शहद उत्पादन में भी पंजाब का योगदान करीब 20% और मशरूम उत्पादन में रिकॉर्ड 48% है। पंजाब की यह सफलता उसकी फ़सल सघनता के कारण है, जो 186% से भी अधिक है। राज्य का लगभग 82% से 87% भूभाग खेती के अंतर्गत आता है, जबकि राष्ट्रीय औसत केवल 40% है। यही कारण है कि प्रति हेक्टेयर उत्पादन के मामले में पंजाब के किसान देश में अग्रणी बने हुए हैं और देश की भुखमरी मिटाने में सबसे आगे खड़े हैं।

परन्तु दुर्भाग्यवश कृषि उत्पादन से लेकर लंगर चलाने व ज़रूरतमंदों की मदद के लिये अग्रणी रहने वाले इस राज्य को विगत कुछ वर्षों से मात्र नशे को लेकर बदनाम करने की बड़ी साजिश रची जा रही है। चूँकि पंजाब की 17 वीं विधानसभा चुनाव फरवरी 2027 में कराए जाने की पूरी संभावना इसीलिये चुनाव पूर्व विभिन्न राजनैतिक दल पंजाब में कथित तौर पर व्याप्त नशे



की समस्या को एक प्रमुख राजनैतिक मुद्दा बना रहे हैं। मिसाल के तौर पर भारतीय जनता पार्टी ने हाल ही में राज्य की सभी 117 विधानसभा सीटों पर 13 दिवसीय नशा मुक्त पंजाब यात्रा निकाली और नशे को ही राज्य का अपना मुख्य चुनावी एजेंडा घोषित किया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पिछले दिनों जालंधर में यह घोषणा की, कि यदि पंजाब में भाजपा की सरकार बनती है, तो 31 दिसंबर 2029 तक पंजाब को पूरी तरह से नशे के कारोबार से मुक्त कर दिया जाएगा। उन्होंने राज्य की भगवंत मान सरकार को आपदा सरकार क्रार देते हुये यह आरोप लगाया कि आम आदमी पार्टी ने राज्य में सिंथेटिक ड्रग्स के अवैध कारोबार को खुलेआम फलने-फूलने दिया है। जबकि आप नेताओं का कहना है कि केंद्र सरकार पंजाब को बदनाम कर रही है। आप नेताओं ने गुजरात जैसे राज्यों के बंदरगाहों पर पकड़े जाने वाले भारी मात्रा में नशीले पदार्थों का हवाला देते हुए केंद्र की सीमा सुरक्षा की विफलता पर सवाल उठाए हैं। केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने वादा किया है कि सत्ता में आने के 6 महीने के भीतर पंजाब के पूरे ड्रग नेटवर्क को ध्वस्त कर दिया जाएगा और नशे के व्यापारियों को जेल भेजा जाएगा। पंजाब में कथित तौर पर फैले नशा नेटवर्क को लेकर बनाई गई फ़िल्म उड़ता पंजाब ने और भी इस विषय को

प्रमुखता से कुछ इसतरह प्रचारित कर दिया गोया देश का कृषि प्रमुख व भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के माध्यम से अपना अतुलनीय योगदान देने वाला देश का यही इकलौता राज्य है जो नशे में डूबा हुआ है।राजनीतिक दल भी एक-दूसरे को घेरने के लिए इस मुद्दे को कुछ इस तरह उछाल रहे हैं मानो पंजाब का हर दूसरा नागरिक नशेड़ी हो। जो कि तथ्यात्मक रूप से पूरी तरह ग़लत व निराधार है।

जब हम राष्ट्रीय सन्दर्भ में पंजाब पर लगने वाले इसी लांछन व काले धब्बे का जायज़ा लेने की कोशिश करते हैं तो हमें आंकड़ों के अनुसार यह पता चलता है कि अरुणाचल प्रदेश राज्य शराब की खपत में देश में सबसे आगे है। यहाँ लगभग 53% पुरुष और 24% महिलाएं शराब का सेवन करती हैं। इसी तरह छत्तीसगढ़ और त्रिपुरा राज्यों में भी शराब की खपत का प्रतिशत अन्य राज्यों की तुलना में काफ़ी अधिक है। जबकि अफ़्रीम के सेवन में मिज़ोरम का नाम देश में सबसे आगे आता है। इसी तरह भांग व गांजे की चपेट में आने वाले सबसे अधिक आबादी वाले राज्यों में उत्तर प्रदेश और बिहार का नाम सर्वोपरि आता है। जबकि हशीश व चरस जैसे शेंन के लिये हिमाचल के कसौल व मलाना जैसे इलाक़ों को सबसे प्रमुख माना जाता है। इस इलाक़े

में तो लाखों की संख्या में विदेशी विशेषकर इस्राईली नागरिक स्थायी रूप से यहाँ रहकर न केवल नशा करते हैं बल्कि इसके कारोबार में भी शरीक हैं। कसोल- मलाना का यह नेटवर्क गोवा तक फैला हुआ है। हाँ,पंजाब में अफ़्रीम की श्रेणी से जुड़े नशों का इस्तेमाल इस समय ज़्यादा ज़रूर हो रहा है, जिनमें चिट्ठा जोकि हेरोइन और सिंथेटिक ड्रग्स का मिश्रण है, यह सबसे ख़तरनाक है। इसके अलावा पारंपरिक तौर पर भुक्की व अफ़्रीम का चलन भी तेज़ी से बढ़ा है। परन्तु सवाल यह है कि जिस सिख बाहुल्य राज्य में जहाँ की बड़ी आबादी धूम्रपान को भी वर्जित समझती हो और कई शहरों,क़स्बों व गांवों में तो बीड़ी,सिगरेट व तम्बाकू भी आसानी से उपलब्ध न हो उस समाज से जुड़े लोग आख़िर नशे की गिरफ़्त में कैसे आ गये ?

दरअसल जो पंजाब कभी हरित क्रांति के कारण बहुत समृद्धि था वह पिछले कुछ दशकों में खेती से आमदनी घटने, उद्योगों की कमी और शिक्षित युवाओं में बेरोज़गारी बढ़ने के कारण निराशा में डूबता जा रहा है। दूसरी बात यह कि पंजाब के युवाओं में अमेरिका,कनाडा,यू के और ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में जाने की भारी होड़ लगी रहती है। परन्तु जिन युवाओं का वीज़ा नहीं लग पाता या जो असफल हो जाते हैं अथवा ठगे जाते हैं , वे मानसिक तनाव और अवसाद के कारण भी नशे की लत का शिकार हो रहे हैं। जहाँ तक नशीली सामग्री की उपलब्धता का सवाल है तो पंजाब की पाकिस्तान के साथ करीब 553 किलोमीटर लंबी अंतर्राष्ट्रीय सीमा लगती है। अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान से होने वाली ड्रग्स की तस्करी के लिए पंजाब एक ट्रान्ज़िट रूट बन जाता है। हाल के दिनों में तो तस्करी द्वारा सीमा पार से ड्रोन के ज़रिए नशीले पदार्थों की सप्लाई करने के मामलों में भी बढ़ोतरी हुई है। निश्चित रूप से सीमा पार से आने वाली नशीले सामान की खेप को रोकने की ज़िम्मेदारी केंद्र सरकार व उसके अधीनस्थ सुरक्षा बलों की है।

राशिफल

मेष- अधिकारियों का समर्थन फलप्रद होगा, कार्य व्यवसाय, गति अनुकूल तथा चिंता बनेगी।

वृष- कार्यवृत्ति में सुधार, धन लाभ, मनोवृत्ति उत्तम उत्साहवर्धक होगी, कार्ययोजना बनेगी।

मिथुन- आशानुकूल सफलता का हर्ष, बिगड़े कार्य बनेंगे, व्यावसायिक क्षमता अनुकूल होगी।

कर्क- समय की अनुकूलता के कारण बिगड़े कार्य बनेंगे, व्यावसायिक क्षमता अनुकूल होगी।

सिंह- मनोबल कमजोर होगा, विरोधियों से परेशानी, असफलता, समय नष्ट होगा।

कन्या- थकावट, बेचैनी, दूसरों के कार्य में फंसने से तनाव बनेगा, असंमजस में अवश्य रहेंगे।

तुला- संघर्ष में सफलता, कार्य बनने में हर्ष, किन्तु स्थिति को समझ कर कार्य अवश्य ही करें।

वृश्चिक- सफलता के योग बने, किन्तु समय अनुकूल नहीं, विशेष कार्य स्थगित रखे।

धनु- कार्यकुशलता से संतोष, सामाजिक कार्य प्रभुत्व वृद्धि हो, कार्य बन ही जायेंगे।

मकर- कार्य सिद्ध, चिन्ता निवृत्ति योजना फलीभूत हो, बिगड़े कार्य अवश्य ही बन जायेंगे।

कुंभ- धन हानि, वृथा क्लेश, अज्ञाति, मानसिक विक्षम, मन उद्विग्नता बना ही रहेगा।

मीन- व्यावसायिक क्षमता मंद होगी, स्त्री शरीर कष्ट, मनोबल उत्साह वर्धक होगा।

शादी में लाल की जगह पेस्टल कलर्स ट्राय करें



महिलाएं शादी में पारंपरिक परिधानों के साथ ही स्टाइलिश भी दिखना चाहती हैं। वहीं कुछ बातों का ध्यान रखकर आप अपने स्टाइल को बेहतर बना सकती हैं। इसके साथ ही ये भी जरूरी है कि आप उस परिधान में आराम का अहसास भी करें।

शादी में लाल और पिंग कलर पहनने का ट्रेंड हो चुका है पुराना। बेशक इसे शुभ माना जाता है और बरसों से इसके ट्रेंड में रहने की एक और वजह है कि ये कलर हर एक स्किन टोन को सूट करता है लेकिन शादी में खूबसूरत और खास नजर आने के लिए रेड (लाल) की जगह पेस्टल कलर्स ट्राय करें जो मानिए बहुत ही अच्छा लगेगा। आइवरी, मिंग, न्यूड, सिल्वर

कलर्स हर एक सीजन के हिसाब से बेहतर विकल्प होते हैं। पेस्टल कलर के एम्बॉयड्ड लहंगे के साथ पर्ल आभूषणों (जूलरी) को टीमअप करें और दें अपने दुल्हन वाले लुक को मॉडर्न रुप दें।

आभूषणों के बिना ब्राइडल लुक अधूरा है इसलिए इनकी शॉपिंग के वक्त कई सारी चीजों का ध्यान रखना चाहिए। जब भी आभूषण खरीदने जाएं अपनी शादी वाली ड्रेस भी लेकर जायें। बहुत हैवी लहंगे के साथ हैवी जूलरी, चमक-दमक वाले हेयर ऐक्सेसरीज और हैवी ब्रेसलेट्स ओवर लंगेंगे। बेहतर होगा कॉन्ट्रास्ट कलर्स की जूलरी पहनें जो आपके लुक को अपलिफ्ट करते हैं।

हॉट लुक देगा ये स्टाइल

पहले जहां बैकलेस पैटर्न को सिर्फ वेस्टर्न आउटफिट्स में ही देखा जा सकता था वहीं अब इसे पारंपरिक वेयर्स में भी बहुत पसंद किया जा रहा है। जो आपको क्लासी और ग्लैमरस लुक लुक देने के लिए बेस्ट होते हैं। तो लहंगे के साथ इस बार आप बैकलेस पैटर्न वाले ब्लाउज और रिसेप्शन में बैकलेस गाउन और बाकी फंक्शन में बैकलेस अनारकली ट्राय कर सकती हैं। आजकल बाजार में बैकलेस हाफ साड़ी और बो के साथ बैकलेस गाउन भी अवेलेबल हैं जिन्हें आप अलग-अलग फंक्शन्स में पहनकर सेट कर सकती हैं अपना स्टाइल स्टेटमेंट।

सही मेकअप बढ़ाते हैं खूबसूरती

अगर आपने पेस्टल कलर का आउटफिट चुना है तो बेहतर होगा मेकप लाइट रखें। नैचुरल लुक को बरकरार रखने के लिए स्मोकी आईज और न्यूड लिपस्टिक लगाएं। मेकअप में सबसे पहले नज़रे आंखों पर ही जाती हैं इसलिए इस पर ध्यान दें। बहुत गहरी लिपस्टिक और आई मेकप के साथ लुक भी हैवी लगता है।

लहंगे के साथ शर्ट में दिखेंगी

ग्लैमरस

बदलते फैशन के दौर में कपड़े पहनने का ट्रेंड तेजी से बदल रहा है। आज की युवा पीढ़ी को फ्यूजन कपड़े ज्यादा पसंद आते हैं। बात अगर लहंगे की जाए तो लहंगा भले ही ट्रेडिशनल आउटफिट हो। लेकिन इसको भी आप अलग-अलग तरीके से पहने सकते हैं। कई महिलाएं लहंगे के हैवी वर्क और चुन्नी को संभालने की वजह से इसे पहनने से दूर भागती हैं लेकिन आप लहंगे को चोली के बजाए शर्ट के साथ भी पहन सकती हैं। इससे आपका लहंगा ज्यादा आकर्षित लगेगा। अगर आप अपने पुराने लहंगे को भी शर्ट के साथ पहनेंगी तो यह लहंगे को बिल्कुल नई लुक देगी। आप अपनी पसंद के अनुसार अपनी लुक में बदलाव कर सकती हैं। मिसाल के तौर पर आप शर्ट पर जाइनर जैकेट भी पहन सकती हैं। आजकल कई सेलेब्रिटी लहंगे के साथ शर्ट पहने दिखाई देती हैं। आप भी यहां ऐसी ही कुछ फ्यूजन लुक देखकर ट्राई कर सकती हैं।

मुंहासों से इस प्रकार मिलेगी राहत



मुंहासे की समस्या आम है पर इससे संदरता प्रभावित होती है। ऐसे में युवतियां इन्हें ठीक करने कोई भी घरेलू प्रयोग करने लगती हैं जो कई बार इन्हें

ठीक करने की जगह और भी बढ़ा देता है। नीबू आदि लगाने से यह बढ़ भी सकते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि मुंहासा प्रभावित हिस्से को हाथ भी नहीं चाहिए। कई बार आंतरिक असंतुलन खासकर हार्मोन की वजह से मुंहासे निकलते हैं। आंतरिक समस्या से मुंहासे होने पर रक्त की जांच व अल्ट्रासाउंड से पता चल जाता है। मुंहासों से बचने के लिए संतुलित व स्वास्थ्यपरक आहार जैसे फलों, सब्जियों का सेवन करें। अपनी त्वचा को नियमित रूप से मॉइश्चराइज करें, जिससे त्वचा में नमी बनी रहे। बैक्टीरिया को दूर रखने के लिए चेहरे पर कुछ क्रीम आदि लगाते समय अपने हाथ जरूर धो लें। प्रभावित हिस्से को लगातार हाथ लगाने से बैक्टीरिया के फैलने की संभावना होती है, जिससे और मुंहासे निकल सकते हैं। टी (चाय) ट्री तेल जीवाणु रोधी और एंटी फंगल होता है और यह तैलीय त्वचा के लिए उपयुक्त होता है। मुंहासों से बचने के लिए इस तेल का इस्तेमाल किया जा सकता है। कई लोगों का मानना होता है कि मुंहासे त्वचा के अधिक तैलीय होने के कारण निकलते हैं और ऐसे में वे कठोर साबुन या स्क्रब का इस्तेमाल करना शुरू कर देते हैं जो नुकसानदेह हो सकता है क्योंकि ज्यादा ड्राई स्किन मुंहासों को और बढ़ा सकती है।



सही हेयर स्टाइल से बदलेगा लुक

खूबसूरती बढ़ाने में बालों का भी अहम स्थान होता है। केवल हेयर स्टाइल में बदलाव करके भी आप अपने लुक को नया रुप दे सकती हैं। वहीं हमेशा हेयर स्टाइल बदलने की जगह सही हेयर कट को अपनाकर भी आप अपनी पर्सनैलिटी को अलग लुक दे सकती हैं। हेयर एंड ब्यूटी एक्सपर्ट के अनुसार अगर आप कामकाजी हैं तो आपको ऐसा हेयर कट करवाना चाहिए, जिसकी देखभाल आप खुद कर सकें। जैसे अगर लंबे बालों के साथ आप कई लेयर कट रखना चाहती हैं तो आपके लिए हर समय बाल खुले रख पाना संभव नहीं है। ऐसे में आपको फ्रंट कट और स्ट्रेट बाल रखने चाहिए, जिन्हें आप ज़रूरत पड़ने पर बांध भी सकें।

आभूषणों की चमक बरकरार रखने करें ये उपाय

आभूषणों से नारी की सुंदरता कई गुना बढ़ती है, इसलिए सभी महिलाएं किसी भी समारोह में अधिक से अधिक बेशकीमती आभूषणों को पहनने बेकरार रहती हैं पर कई बार ठीक से देखभाल नहीं होने के कारण आभूषण अपनी चमक खो देते हैं, ऐसे में उन्हें फिर से निखारने कुछ घरेलू उपाय किये जा सकते हैं।

हीरा काफी कीमती रत्न होता है, इसके आभूषणों में काफी निवेश होता है, इसलिए इसकी देखभाल भी जरूरी है। हीरे के आभूषण को अच्छी तरह संभाल कर रखना चाहिए और मुलायम टूथब्रश से साफ करना चाहिए। हीरे के आभूषण को समान मात्रा में पानी और अमोनिया मिलाकर उसमें 30 मिनट तक डुबोए रख सकती हैं, फिर इसे धोकर साफ, मुलायम सूती कपड़े से पोंछकर अच्छी तरह सुखा लें।

अपने आभूषण को पैडेड (गद्दीदार या अस्तर लगे) बॉक्स में रखें। ऐसा नहीं करने

से हीरे पर खरोंच के निशान आ सकते हैं। लंबे अर्से तक हीरे के आभूषणों को सुरक्षित रखने के लिए हर आभूषण को अलग-अलग पैडेड बॉक्स में रखें।

अगर आपके आभूषण में हीरे के साथ ओपल और मोती भी जड़े हुए हैं तो इसे लंबे समय तक बहुत ज्यादा ड्राई जगह या अंधेरे जगह में नहीं रखें, क्योंकि इससे इस रत्न की चमक फीकी पड़ सकती है। आभूषणों के बक्से को भी नमी वाली जगह पर भी नहीं रखें।

आभूषण को हमेशा मुलायम टूथब्रश से साफ करें। आभूषण को क्लीनिंग सॉल्यूशन से निकालकर हीरे के आसपास हल्के हाथों से ब्रश से साफ करें।

नियमित रूप से सफाई हीरे की चमक को बरकरार रखती है। बेकिंग सोडा या टूथपेस्ट से आभूषण को साफ करने से बचें। इसे सौम्य लिक्विड सोप का इस्तेमाल कर गुनगुने पानी से साफ करें। चाहे तो



हानिकारक केमिकल रहित व मॉइश्चराइजर रहित हैंड सोप का भी इस्तेमाल कर सकती हैं।

आप अपने हीरे के आभूषण को समान मात्रा में पानी और अमोनिया मिलाकर उसमें 30 मिनट तक डुबोए रख सकती हैं, फिर

इसे धोकर साफ, मुलायम सूती कपड़े से पोंछकर अच्छी तरह सुखा लें।

हीरे के आभूषण को धारदार, नुकीली, या पैनी (शार्प) चीजों से दूर रखें, इससे इसकी सतह पर खरोंच के निशान पड़ सकते हैं।

हीरे के आभूषण उतारकर ही स्नान करने

जाएं। पानी में मौजूद क्लोरीन इसकी चमक फीकी कर सकता है।

इत्र या हेयरस्प्रै के इस्तेमाल के बाद ही हीरे के आभूषण को पहनें, क्योंकि इनमें मौजूद केमिकल इसकी रंगत को फीकी कर सकता है।

व्यायाम आदि करने के दौरान आभूषण पहनने से बचें क्योंकि इस दौरान पसीना निकलता है और कुछ आभूषण खासकर कृत्रिम मोती के आभूषण रंगहीन हो सकते हैं।

अपने हीरे के आभूषण को साल में दो बार पेशेवर ज्वैलर के पास नियमित जांच के लिए जरूर ले जाएं, वे इस बात की अच्छी तरह से जांच कर सकेंगे कि ये अच्छी शेष में हैं या नहीं और इससे पहले कोई बड़ी टूट-फूट हो, पहले ही किसी तरह के छोटे-मोटे नुकसान होने पर रिपेयर कर देंगे, जिससे आपको अपने कीमती आभूषण को खोने का डर नहीं रहेगा।

सचिन, रूट सहित इन क्रिकेटरों के नाम हैं टेस्ट क्रिकेट में सबसे अधिक रन

मुम्बई (ए)। टेस्ट क्रिकेट को अब भी खेल का आधार माना जाता है और ये भी कहा जाता है कि इसमें बल्लेबाजों की असली परीक्षा होती है। विश्व भर के कई महान खिलाड़ियों ने अपने करियर के दौरान लंबे समय तक क्रीज पर टिककर इस प्रारूप में ऐसे अहम रिकॉर्ड बनाए हैं। इसमें से एक है सबसे अधिक रनों का रिकॉर्ड। भारत के सचिन तेंदुलकर सहित कई बल्लेबाज ऐसे हैं जिनके नाम सबसे अधिक रनों के रिकॉर्ड हैं।

सचिन तेंदुलकर : इसमें सचिन नंबर एक पर हैं। साल 1989 से 2013 के बीच इस बल्लेबाज ने अपने करियर में 200 टेस्ट मैचों की 329 पारियों में 15921 रन बनाए। उनका उच्चतम स्कोर नाबाद 248 रन और औसत 53.78 का रहा, जिसमें 51 शतक और 68 अर्धशतक शामिल हैं।

जो रूट : वहीं दूसरे नंबर पर इंग्लैंड के अनुभवी बल्लेबाज और

कप्तान जो रूट का नाम आता है। उन्होंने अब तक 169 टेस्ट मैचों में 14278 रन बटोरे हैं, जिसमें 41 शतक और 69 अर्धशतक शामिल हैं। उनका औसत 50.45 और उच्चतम स्कोर 250 रन है।

रिकी पोंटिंग : ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान और आक्रामक बल्लेबाज रिकी पोंटिंग इस सूची में तीसरे नंबर पर हैं। साल 1995 से 2012 के बीच 168 टेस्ट मैचों में उन्होंने 13378 रन बनाए, जिसमें 41 शतक और 62 अर्धशतक शामिल हैं। उनका औसत 51.85 और सर्वोच्च स्कोर 257 रन रहा।

जैक्स कैलिस : चौथे स्थान पर दक्षिण अफ्रीका के सर्वकालिक महान ऑलराउंडर जैक्स कैलिस हैं। साल 1995 से 2013 तक खेलते हुए कैलिस ने 166 टेस्ट मैचों में 13289



रन बनाए। उनके नाम 45 शतक और 58 अर्धशतक दर्ज हैं, जबकि उनका औसत 55.37 और उच्चतम स्कोर 224 रन रहा।

राहुल द्रविड़ : भारत के भरोसेमंद बल्लेबाज रहे राहुल द्रविड़ पांचवें नंबर पर हैं। साल 1996 से 2012 के दौरान 164 टेस्ट मैचों में इस बल्लेबाज ने 13288 रन बनाए। उनका सर्वोच्च स्कोर

270 रन, औसत 52.31, और 36 शतक तथा 63 अर्धशतक उनके करियर की पहचान रहे हैं।

एलिस्टर कुक : इंग्लैंड के पूर्व कप्तान एलिस्टर कुक छठे स्थान पर हैं। 2006 से 2018 के बीच 161 टेस्ट मैचों में उन्होंने 12472 रन बनाए, जिसमें 33 शतक और 57 अर्धशतक शामिल हैं। उनका उच्चतम स्कोर 294 रन और

औसत 45.35 रहा।

कुमार संगकारा : सातवें नंबर पर श्रीलंका के महान विकेटकीपर-बल्लेबाज कुमार संगकारा हैं। 2000 से 2015 के बीच 134 टेस्ट मैचों में उन्होंने 12400 रन बनाए। उनका बेहतरीन औसत 57.40, 38 शतक, 52 अर्धशतक और सर्वोच्च स्कोर 319 रन उनकी बल्लेबाजी का प्रमाण हैं।

ब्रायन लारा : वेस्टइंडीज के जादुई बल्लेबाज ब्रायन लारा आठवें स्थान पर आते हैं। 1990 से 2006 तक लारा ने 131 टेस्ट मैचों में 11953 रन बनाए। उनका उच्चतम स्कोर नाबाद 400 रन है, जो टेस्ट क्रिकेट का एक अटूट विश्व रिकॉर्ड है। उनके खाते में 34 शतक और 48 अर्धशतक भी दर्ज हैं, जबकि उनका औसत 52.88 रहा।

शिवनारायण चंद्रपॉल : नौवें पायदान पर वेस्टइंडीज के ही अनूटे बल्लेबाज शिवनारायण चंद्रपॉल हैं। 1994 से 2015 के दौरान 164 टेस्ट मैचों में उन्होंने 11867 रन बनाए, जिसमें 30 शतक और 66 अर्धशतक शामिल हैं। उनका औसत 51.37 और सर्वोच्च स्कोर नाबाद 203 रन रहा।

महेला जयवर्धने : इस सूची में दसवें और अंतिम स्थान पर श्रीलंका के पूर्व कप्तान महेला जयवर्धने हैं। 1997 से 2014 के बीच 149 टेस्ट मैचों में उन्होंने 11814 रन बनाए। उनके करियर में 34 शतक, 50 अर्धशतक, 49.84 का औसत और 374 रन का उच्चतम स्कोर शामिल है। इन सभी महान खिलाड़ियों ने अपने अद्वितीय कौशल और जुझारूपन से टेस्ट क्रिकेट के इतिहास को समृद्ध किया है।



जापान के आईसी प्रीफेक्चर के हेकिनान में एशियाई खेलों के बीच बीच वॉलीबॉल मुकाबले में गेंद बचाने की कोशिश करती चीन की डोंग जिए।

विश्वकप करीब होने से अब एक ही संयोजन के साथ उतरेंगे : शुभमन

मुम्बई (ए)। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान शुभमन गिल ने कहा है कि साल 2027 में होने वाले एकदिवसीय विश्वकप में अब ज्यादा समय नहीं है। ऐसे में अब टीम संयोजन में और अधिक प्रयोग नहीं किये जाएंगे। शुभमन के अनुसार अब टीम अब तक के प्रयोगों के बाद पाये गये सबसे बेहतर संयोजन के साथ आने वाले मुकाबलों में उतरेगी। भारतीय टीम ने हाल में वेस्टइंडीज के खिलाफ सीरीज में पहले दो मैच जीते थे पर अंतिम मैच में तीन सौ से अधिक रन बनाने के बाद भी उसके गेंदबाज लक्ष्य का बचाव नहीं कर पाये थे। जिससे उसके हाथ से मुकाबला निकल गया। इससे सबक लेते हुए टीम को अपनी गेंदबाजी



की कमजोरी को दूर करना होगा। इस सीरीज में हालांकि भारतीय टीम को कई प्रमुख खिलाड़ियों के बीच ही खेलना पड़ा था क्योंकि तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह सहित कई खिलाड़ी एशियाई खेलों के लिए गये हुए थे। दिया। इससे कई बैकअप खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिला। वहीं हार्दिक पंड्या और प्रसिद्ध कृणा जैसे खिलाड़ियों की चोटों ने भी टीम की मुश्किलें इस सीरीज में बढ़ाई

थीं। ऐसे में टीम को अनुभवी के साथ ही युवा खिलाड़ियों को भी टीम में उतारना पड़ा था। इन हालातों में ऋतुराज गायकवाड़, नमन धीर, अंशुल कंबोज और आकिब नबी जैसे खिलाड़ियों को राष्ट्रीय टीम में अपनी दावेदारी पेश करने का अवसर दिया। वहीं नीतीश कुमार रेड्डी और गुरनूर बराड़ जैसे युवा खिलाड़ियों को भी भविष्य के लिए तैयार किया जा रहा है। गिल ने स्वीकार किया कि यह इन खिलाड़ियों के लिए अपने को साबित करने का अच्छा मौका था पर अब वह अगली सीरीज से टीम की पहली पसंद की लाइन-अप और विश्व कप संयोजन न को ध्यान में रखते हुए ही खिलाड़ियों को उतारेंगे।

एशियाई खेलों के समापन समारोह में नीरू ने लहराया भारत का तिरंगा

ओसीए का इंडा कतर को सौंपा

आईसी ए)। जापान के आईसी नागोया में 20वें एशियाई खेलों 2026 का रविवार को एक रंगारंग समारोह में समापन हुआ। मिजुहो पार्क एथलेटिक स्टेडियम में आयोजित इस समापन समारोह की शुरुआत जापान के राष्ट्रगान के साथ हुई, जिसके बाद शामिल देशों के एथलीटों की परेड हुई। स्वर्ण विजेता निशानेबाज नीरू ढांडा ने इस समारोह में भारतीय ध्वज तिरंगा लहराया। नीरू ने यहां 2 स्वर्ण और 1 रजत सहित कुल 3 पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ाया है। पारंपरिक तौर पर ओलंपिक कार्डिसल ऑफ एशिया (ओसीए) का इंडा अगले 21वें संस्करण की मेजबानी करने वाले देश कतर (दोहा) को सौंप दिया गया। कतर को साल 2030 में इन खेलों की मेजबानी मिली है। दोहा दूसरी बार एशियाई खेलों की मेजबानी करेगा, इससे पहले उसने 2006 में भी इन खेलों की मेजबानी की थी।

जापान के आईसी नागोया में आयोजित एशियन गेम्स 2026 का 4 अक्टूबर को भव्य समापन हो गया। 20वें संस्करण के समापन समारोह में नागोया सिटी के मिजुहो पार्क एथलेटिक स्टेडियम में जापान के राष्ट्रगान के साथ शुरुआत हुई, जिसके बाद एथलीटों की परेड हुई। इस गौरवशाली पल में भारत की ध्वजवाहक शूटर नीरू ढांडा थीं, जिन्होंने शान से तिरंगा लहराया। नीरू



ने इस संस्करण में 2 स्वर्ण और 1 रजत सहित कुल 3 पदक जीतकर देश को गौरवान्वित किया। समापन समारोह के दौरान ओलंपिक कार्डिसल ऑफ एशिया (ओसीए) का इंडा कतर को सौंप दिया गया, जो 2030 में दोहा में 21वें संस्करण की मेजबानी करेगा। दोहा दूसरी बार इन खेलों की मेजबानी करेगा, इससे पहले उसने 2006 में भी मेजबानी की थी।

गौरतब है कि एशियाई खेलों में भारत ने कुल 85 पदक हासिल कर पदक तालिका में चौथा स्थान प्राप्त किया। भारत ने 21 स्वर्ण, 27 रजत और 37 कांस्य पदक जीते। पदक तालिका में चीन 169 स्वर्ण सहित कुल 341 पदकों के साथ शीर्ष पर रहा। उसके बाद जापान ने 83 स्वर्ण और कुल 269 पदक जीते, जबकि दक्षिण कोरिया ने 39 स्वर्ण और कुल 150 पदक हासिल किए।

भारत के लिए इस संस्करण की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक क्रिकेट में दोहरा स्वर्ण पदक जीत रही।

भारतीय महिला टीम के ऐतिहासिक स्वर्ण जीतने के बाद, श्रेयस अय्यर की अगुवाई वाली पुरुष टीम ने भी चिर-प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को 19 रनों से हराकर स्वर्ण पदक जीता। टीम के कोच वीवीएस लक्ष्मण ने चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद खिलाड़ियों के शानदार प्रदर्शन की सराहना की। उन्होंने बताया कि जापान में बारिश और सीमित सुविधाओं के कारण अभ्यास सत्रों के लिए पर्याप्त समय नहीं मिला, लेकिन टीम ने मजबूत इरादा दिखाया।

लक्ष्मण ने विश्वास व्यक्त किया कि यह स्वर्ण पदक खिलाड़ियों को भविष्य में लॉस एंजिल्स ओलंपिक जैसे बड़े मंचों पर देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रेरित करेगा। उन्होंने कहा कि ओलंपिक में खेलना किसी भी खिलाड़ी के लिए बहुत बड़े सम्मान की बात है, और उन्हें पूरा भरोसा है कि भारतीय एथलीट अपनी पूरी क्षमता से प्रदर्शन कर देश को गौरवान्वित करेंगे।

बढ़ती महंगाई पर लगाम कसने के लिए आरबीआई रेपो रेट बढ़ा सकता है : विशेषज्ञ

अक्टूबर में होने वाली मौद्रिक नीति समिति की बैठक से पहले अर्थशास्त्रियों ने जताया अनुमान

नई दिल्ली (ए)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की आगामी बैठक से पहले बाजार में ब्याज दरों को

लेकर अटकलें तेज हो गई हैं। बढ़ती महंगाई पर लगाम कसने के प्रयासों के तहत, कई अर्थशास्त्रियों ने रेपो रेट में 25 बेसिस प्वाइंट की बढ़ोतरी का अनुमान जताया है, जिससे यह दर 5.25 फीसदी से बढ़कर 5.50 फीसदी हो सकती है। एक सर्वेक्षण में शामिल 10 में से 8 अर्थशास्त्रियों ने

अक्टूबर की एमपीसी बैठक में इस बढ़ोतरी की संभावना व्यक्त की है। छह सदस्यीय एमपीसी की बैठक 5 से 7 अक्टूबर तक होनी है, जिसके फैसले की घोषणा 7 अक्टूबर को की जाएगी। यह बढ़ोतरी फरवरी 2023 के बाद पहली होगी, जबकि आरबीआई ने पिछली चार बैठकों में



रेपो रेट को 5.25 फीसदी पर स्थिर बनाए रखा था। गौरतलब है कि

2025 में कुल 125 बेसिस प्वाइंट की कटौती की गई थी। रेपो रेट में संभावित वृद्धि का मुख्य कारण बढ़ती खुदरा और थोक महंगाई है। अगस्त में खुदरा महंगाई बढ़कर 4.82 फीसदी हो गई थी, जो आरबीआई के 4 फीसदी के मध्यम अवधि लक्ष्य से काफी ऊपर है। इसी अवधि में थोक

महंगाई भी 9.92 फीसदी तक पहुंच गई। कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें और भू-राजनीतिक तनाव भी भविष्य में महंगाई का दबाव बढ़ने की चिंता बढ़ा रहे हैं। महंगाई पर नियंत्रण के साथ-साथ आरबीआई के सामने आर्थिक विकास को बनाए रखने की चुनौती भी है।

साइबर क्राइम विंग की कार्रवाई ने खोली सूचना तंत्र की पोल; सवाल-इतना बड़ा नेटवर्क आखिर संबंधित थाने की नजर से कैसे बचा रहा?

गिरवाई में रुपए 60 करोड़ का गेमिंग नेटवर्क, स्थानीय पुलिस को भनक तक नहीं?

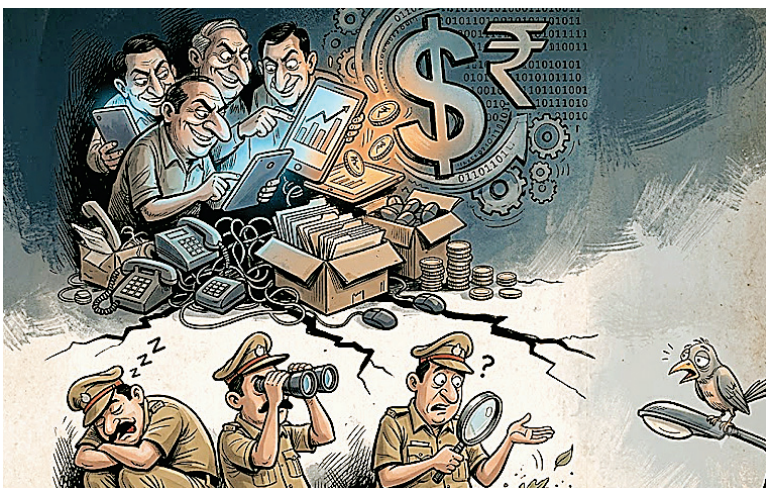
अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। गिरवाई थाना क्षेत्र में ऑनलाइन गेमिंग और कथित साइबर फ्रॉड का ऐसा नेटवर्क सामने आया है, जिसमें पुलिस के मुताबिक हर महीने 5 से 6 करोड़ रुपये तक का लेन-देन किया जा रहा था। यानी सालभर में यह आंकड़ा करीब 60 करोड़ रुपये तक पहुंचने का दावा किया गया है। साइबर क्राइम विंग की कार्रवाई में पांच आरोपियों की गिरफ्तारी, 19 मोबाइल फोन, 17 झरूकार्ड, 38 सिम कार्ड, पासबुक, चेकबुक, लैपटॉप और टैबलेट की बरामदगी ने इस पूरे मामले की गंभीरता बढ़ा दी है। लेकिन इस कार्रवाई के बाद सबसे बड़ा सवाल सिर्फ ऑनलाइन गेमिंग नेटवर्क पर नहीं, बल्कि स्थानीय पुलिस के सूचना तंत्र पर भी खड़ा हो रहा है।

अगर पुलिस के दावे के मुताबिक गिरवाई क्षेत्र में लंबे समय से करोड़ों रुपये का लेन-देन करने वाला नेटवर्क सक्रिय था, तो फिर संबंधित थाना पुलिस को इसकी भनक क्यों नहीं लगी? आखिर इतने बड़े स्तर पर चल रही गतिविधि स्थानीय सूचना तंत्र की नजर से कैसे बची रही?

साइबर क्राइम विंग ने पकड़ा, तो स्थानीय तंत्र क्या कर रहा था?

यहां सबसे बड़ा विरोधाभास सामने आता है। साइबर क्राइम विंग को मुखबिर से सूचना



मिलती है और टीम कार्रवाई कर देती है। चार युवक मौके पर लैपटॉप, टैबलेट और मोबाइल के साथ काम करते मिलते हैं। इसके बाद पूछताछ में करोड़ों रुपये के कथित लेन-देन की जानकारी सामने आती है।

तो सवाल सीधा है: जब साइबर क्राइम विंग तक सूचना पहुंच सकती है, तो संबंधित थाना पुलिस तक यह सूचना क्यों नहीं पहुंची? क्या स्थानीय पुलिस अपने थाना क्षेत्र में किराए के मकानों, संदिग्ध फ्लैटों, लगातार बदलते बैंक खातों, बड़ी संख्या में सिम कार्ड और संदिग्ध वित्तीय गतिविधियों की निगरानी कर रही थी? या फिर निगरानी और

सूचना संकलन केवल कागजों तक सीमित था?

वरिष्ठ अधिकारियों को सिर्फ गिरफ्तारी नहीं, सिस्टम की भी जांच करनी चाहिए

इस कार्रवाई में आरोपियों की गिरफ्तारी निश्चित तौर पर महत्वपूर्ण है। लेकिन अब वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के सामने इससे भी बड़ा सवाल है—यह नेटवर्क इतने समय तक चला कैसे?

मामले की जांच केवल गिरफ्तार आरोपियों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। यह भी देखा

तीन संभावनाएं, जवाब एक भी नहीं

इस पूरे मामले को फिलहाल तीन नजरिए से देखा जा सकता है।

पहला—स्थानीय पुलिस का सूचना तंत्र कमजोर था?

अगर करोड़ों रुपये का कथित नेटवर्क कई महीनों से संचालित हो रहा था और स्थानीय पुलिस को इसकी जानकारी नहीं थी, तो यह निश्चित तौर पर सूचना संकलन और निगरानी व्यवस्था पर गंभीर सवाल है।

दूसरा—सूचना संकलन में कहीं न कहीं बड़ी चूक हुई?

इतने मोबाइल फोन, सिम कार्ड, बैंक खाते, झरूकार्ड और लगातार होने वाले बड़े वित्तीय लेन-देन के बावजूद स्थानीय स्तर पर कोई सूचना विकसित नहीं होना भी जांच का विषय होना चाहिए।

तीसरा—क्या किसी स्तर पर संरक्षण या मिलीभगत की संभावना थी?

यह फिलहाल केवल एक सवाल है, कोई स्थापित तथ्य नहीं। लेकिन जब किसी थाना क्षेत्र में इतने बड़े पैमाने पर कथित अवैध गतिविधि का खुलासा होता है और कार्रवाई किसी दूसरी विशेष टीम को करनी पड़ती है, तो स्थानीय स्तर पर संरक्षण की संभावना से भी जांच एजेंसियां पूरी तरह आंखें नहीं मूंद सकती।

जाना चाहिए कि संबंधित थाना क्षेत्र में सूचना तंत्र किस स्तर पर काम कर रहा था, बीट स्टाफ को क्या जानकारी थी, स्थानीय मुखबिर तंत्र ने क्या रिपोर्ट दी और यदि कोई रिपोर्ट नहीं दी तो क्यों नहीं दी?

और सबसे महत्वपूर्ण: क्या किसी अधिकारी या कर्मचारी की लापरवाही, चूक अथवा किसी प्रकार की मिलीभगत की भूमिका रही?

अगर चूक हुई है तो जिम्मेदारी तय होनी चाहिए। अगर सूचना तंत्र कमजोर है तो उसे मजबूत किया जाना चाहिए। और अगर जांच में किसी स्तर पर संरक्षण या मिलीभगत सामने

आती है तो उस पर भी उतनी ही सख्त कार्रवाई होनी चाहिए जितनी नेटवर्क चलाने वालों पर।

क्योंकि सवाल सिर्फ एक ऑनलाइन गेमिंग नेटवर्क का नहीं है?

सवाल यह है कि एक थाना क्षेत्र में कथित तौर पर करोड़ों रुपये का खेल चलता रहा और स्थानीय पुलिस को इसकी भनक तक क्यों नहीं लगी?

अब इस सवाल का जवाब गिरफ्तारियों से नहीं, बल्कि निष्पक्ष विभागीय और तकनीकी जांच से मिलना चाहिए।

सैनिकों और उनके परिवारों का सम्मान देश की सर्वोच्च प्राथमिकता: ऊर्जा मंत्री

ऊर्जा मंत्री ने किया सेवा संकल्प अभियान के तहत 51 पूर्व सैनिकों का किया सम्मान



अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। प्रदेश सरकार द्वारा चलाए जा रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत रविवार को ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने उप नगर ग्वालियर के भूतपूर्व सैनिकों तथा उनके परिवारों का सम्मान किया। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर के रেসकोर्स रोड स्थित 38 नम्बर कार्यालय पर आयोजित इस समारोह में देश की सरहद की रक्षा करते हुए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले वीर सपूतों की वीरांगनाओं, उनके परिजनों एवं पूर्व सैनिकों ने भाग लिया। इस अवसर पर श्री योगेन्द्र सिंह तोमर, श्री

प्रमोद परमार, श्री शैलेन्द्र सिंह सिकरवार, श्री लवी खंडेलवाल, श्री महेश सिंह भदौरिया, श्री अरुण बाजपेयी सहित वरिष्ठ नेता एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने वीर सैनिकों से जुड़ी स्मृतियों एवं वीर गाथाओं को साझा करते हुए राष्ट्र सेवा में सैनिकों के योगदान को अनुकरणीय बताया। समारोह के दौरान ऊर्जा मंत्री ने 51 वीर सपूतों को शॉल और श्रीफल भेंट कर उनके त्याग, समर्पण एवं देश के प्रति योगदान को नमन करते हुए उनके प्रति सम्मान व्यक्त

किया। कार्यक्रम में उपस्थित पूर्व सैनिकों ने भी अपने अनुभव साझा किए तथा सैनिकों एवं उनके परिवारों के कल्याण के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

सेवा संकल्प अभियान के तहत उप नगर ग्वालियर में समाज के विभिन्न वर्गों के सम्मान, कल्याण एवं जनसेवा से जुड़ी गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। इसी क्रम में आयोजित इस समारोह के माध्यम से वीर सैनिकों एवं उनके परिवारों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता की भावना को अभिव्यक्त किया गया।

दुकान के बाहर फायरिंग कर अयोध्या भागा आरोपी, 24 घंटे में ग्वालियर पुलिस ने होटल से दबोचा

स्टाम्प की एंट्री को लेकर हुआ था विवाद, कट्टे से हवाई फायर के बाद तरुण पर भी चलाई गोली; पुलिस से बचने अयोध्या पहुंचा था आरोपी

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। पुरानी हाईकोर्ट के पीछे स्टाम्प की एंट्री को लेकर हुए विवाद के बाद दुकान के बाहर फायरिंग कर फरार हुए आरोपी एजाज उर्फ अयाज खान को ग्वालियर पुलिस ने 24 घंटे के भीतर अयोध्या से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के मुताबिक आरोपी घटना के बाद लगातार ठिकाने बदलते हुए अयोध्या पहुंचा था, जहां एक होटल में घुसते ही पुलिस टीम ने उसे दबोच लिया।

मामला थाना इंदरगंज क्षेत्र का है। पुलिस के अनुसार 3 अक्टूबर को प्रमोद वर्मा ने शिकायत दर्ज कराई थी कि स्टाम्प की एंट्री को लेकर उनके बेटे तरुण वर्मा और आरोपी एजाज उर्फ अयाज खान के बीच विवाद हुआ था। विवाद के दौरान आरोपी ने तरुण को धमकी भी दी थी।

इसके बाद 3 अक्टूबर को करीब 3:25 बजे आरोपी दुकान के बाहर पहुंचा और गाली-गलौज करते हुए कट्टा निकालकर हवाई फायर कर दिया। इसके बाद उसने कट्टे में दूसरा राउंड भरकर तरुण की



ओर फायर किया, लेकिन हथियार नहीं चला। घटना के बाद आरोपी जान से मारने की धमकी देते हुए मौके से फरार हो गया।

मामले को गंभीरता से लेते हुए एसएसपी धर्मवीर सिंह के निर्देश पर पुलिस टीम गठित की गई। इंदरगंज पुलिस ने तकनीकी सूचना

और मुखबिर तंत्र के आधार पर आरोपी की लोकेशन ट्रेस की। पुलिस को जानकारी मिली कि आरोपी अयोध्या, फैजाबाद की ओर भाग गया है।

इसके बाद पुलिस टीम तत्काल उत्तर प्रदेश रवाना हुई और लगातार पीछा करते हुए 4 अक्टूबर को अयोध्या के एक होटल में आरोपी को पकड़ लिया। पुलिस के अनुसार आरोपी पुलिस से बचने के लिए लगातार भाग रहा था, लेकिन होटल में प्रवेश करते ही टीम ने उसे दबोच लिया।

पुलिस पूछताछ में आरोपी द्वारा फायरिंग की घटना करना स्वीकार किए जाने की बात सामने आई है। अब पुलिस घटना में इस्तेमाल अवैध हथियार के संबंध में पूछताछ कर रही है।

अपराध के बाद फरार होकर बच निकलना आसान नहीं। ग्वालियर पुलिस ने फायरिंग के आरोपी को घटना के 24 घंटे के भीतर दूसरे राज्य से गिरफ्तार कर यह साफ संदेश दिया है कि गंभीर अपराध करने वालों पर लगातार कार्रवाई जारी रहेगी।

गिरवाई के प्लैट से चल रहा था कथित साइबर फ्रॉड और ऑनलाइन गैम्बलिंग का खेल, 19 मोबाइल, 17 ATM कार्ड और 38 सिम बरामद; दुबई-कंबोडिया-श्रीलंका कनेक्शन की जांच

रुपए 60 करोड़ सालाना के ऑनलाइन गेमिंग नेटवर्क का खुलासा, 5 गिरफ्तार

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। ग्वालियर पुलिस की साइबर क्राइम विंग ने ऑनलाइन गैम्बलिंग और कथित साइबर फ्रॉड से जुड़े एक बड़े नेटवर्क का खुलासा करते हुए पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार, गिरवाई क्षेत्र में एक प्लैट से ऑनलाइन गेमिंग वेबसाइट के जरिए डिजिटल और विड्रॉल का संचालन किया जा रहा था। प्रारंभिक पूछताछ में आरोपियों ने हर महीने करीब 5 से 6 करोड़ रुपये के लेन-देन की जानकारी दी है, जिसे पुलिस सालाना लगभग 60 करोड़ रुपये का कारोबार मानकर जांच कर रही है। पुलिस के मुताबिक, इस नेटवर्क में ऑनलाइन गेमिंग वेबसाइट Fairplay-v.com के माध्यम से पैसों का लेन-देन किया जाता था। कथित तौर पर अलग-अलग बैंक खातों में रकम मंगाई जाती थी और ट्रांजेक्शन की जानकारी व्हाट्सएप के जरिए आरोपियों तक पहुंचाई जाती थी। पुलिस का दावा है कि इन बैंक खातों में ऑनलाइन गेमिंग के साथ साइबर फ्रॉड से जुड़ी रकम भी आती थी।

बैंक खाते और सिम उपलब्ध कराने का आरोप

पुलिस के अनुसार, आरोपियों ने पूछताछ में बताया कि उन्हें बैंक खाते, मोबाइल फोन, सिम कार्ड, लैपटॉप और टैबलेट उपलब्ध कराने का काम उदय चौहान और संजय रावत करते थे। पुलिस का दावा है कि संजय



गिरवाई के प्लैट में चल रहा था पूरा ऑपरेशन

साइबर क्राइम विंग को 1 अक्टूबर को सूचना मिली थी कि गिरवाई और माधौगंज क्षेत्र के प्लैट में बैंक खाते उपलब्ध कराने तथा ऑनलाइन साइबर फ्रॉड से जुड़े काम किए जा रहे हैं। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर पुलिस टीम ने माता वाली गली, सांवरिया धाम फेस-1, गिरवाई स्थित मकान पर दबिश दी। पुलिस के अनुसार, मकान की ऊपरी मंजिल के एक कमरे में चार युवक लैपटॉप, टैबलेट और मोबाइल फोन के साथ काम

रावत ऐसे लोगों की तलाश करता था, जो कमीशन के बदले अपने बैंक खाते उपलब्ध कराते थे और अन्य लोगों के दस्तावेजों पर सिम भी उपलब्ध कराए जाते थे।

पुलिस के मुताबिक, कुछ बैंक खातों का इस्तेमाल कथित तौर पर कुछ दिनों तक ही किया जाता था और बाद में उन्हें बंद कर दिया जाता था।

इन खातों में आने वाली रकम और उसके ट्रांजेक्शन का रिकॉर्ड रजिस्टर में रखने की बात भी पूछताछ में सामने आई है।

हर महीने रु. 20 हजार की सैलरी, सात दिन में हिसाब

पूछताछ में आरोपियों ने पुलिस को बताया कि उन्हें इस काम के लिए

करते मिले। पूछताछ में उनकी पहचान राजा रायकवार, नीलेश रावत, पंकज पाल और रानू रावत के रूप में हुई। पुलिस का कहना है कि पूछताछ में आरोपियों ने ऑनलाइन गेमिंग वेबसाइट पर डिजिटल और विड्रॉल का काम करने की बात स्वीकार की। उनके मुताबिक, उन्हें अलग-अलग बैंक खातों की जानकारी उपलब्ध कराई जाती थी और खातों में रकम आने के बाद वेबसाइट पर ट्रांजेक्शन को स्वीकार किया जाता था।

करीब 20 हजार रुपये प्रतिमाह दिए जाते थे। पुलिस के अनुसार, उनका हिसाब-किताब प्रत्येक सात दिन में किया जाता था और इस अवधि में नेटवर्क के संचालकों को करीब 4 से 5 लाख रुपये का फायदा होने की बात सामने आई है।

पुलिस का कहना है कि नेटवर्क से जुड़े एक आरोपी के पास कथित

19 मोबाइल, 17 एटीएम और 38 सिम बरामद

पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से बड़ी मात्रा में इलेक्ट्रॉनिक और बैंकिंग सामग्री बरामद की है। इनमें—

- 01 लैपटॉप
- 02 टैबलेट
- 19 मोबाइल फोन
- 17 एटीएम कार्ड
- 04 पासबुक

म्यूल बैंक खातों के झरूकाई रहते थे और उन खातों में आने वाली रकम निकाली जाती थी।

दुबई, कंबोडिया और श्रीलंका से जुड़ रहे तार

इस कार्रवाई का सबसे महत्वपूर्ण पहलू इसका कथित अंतरराष्ट्रीय कनेक्शन है। पुलिस के अनुसार, गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ में नेटवर्क के दुबई, कंबोडिया और श्रीलंका से जुड़े होने की जानकारी सामने आई है। अब पुलिस इस नेटवर्क में विदेश से जुड़े लोगों की भूमिका, पैसों के स्रोत और अंतरराष्ट्रीय लेन-देन की कड़ियों की जांच कर रही है। पुलिस उस व्यक्ति की भी तलाश कर रही है, जो कथित तौर पर म्यूल बैंक खाते, मोबाइल फोन, सिम कार्ड, लैपटॉप और टैबलेट उपलब्ध कराने में मदद करता था।

पांच आरोपी गिरफ्तार, आगे भी बढ़ सकती है कार्रवाई

पुलिस ने मामले में राजा

- 09 चेकबुक
- 38 सिम कार्ड
- अन्य सामग्री शामिल है।

पुलिस अब बरामद मोबाइल फोन, लैपटॉप, बैंक खातों और सिम कार्ड की तकनीकी जांच के जरिए नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों और लेन-देन की पूरी कड़ी खंगाल रही है।

रायकवार, नीलेश रावत, पंकज पाल, रानू रावत और उदय चौहान को गिरफ्तार किया है। वहीं संजय रावत की भूमिका को लेकर भी पुलिस पूछताछ और जांच कर रही है। पुलिस के अनुसार, आरोपियों के खिलाफ थाना क्राइम ब्रांच में अपराध क्रमांक 37/26 के तहत धारा 318(4), 61(2) बीएनएस, 4(ए) पब्लिक गैम्बलिंग एक्ट तथा 66सी, 66डी आईटी एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है।

अब जांच का अगला फोकस इस नेटवर्क में इस्तेमाल हुए बैंक खातों, पैसों के वास्तविक स्रोत, विदेश से जुड़े संपर्कों और उन लोगों तक पहुंचने पर है, जिन्होंने कथित तौर पर बैंक खाते और सिम उपलब्ध कराए। यदि जांच में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पैसों के लेन-देन की पुष्टि होती है तो यह कार्रवाई साइबर फ्रॉड और ऑनलाइन गैम्बलिंग के एक बड़े नेटवर्क तक पहुंचने की दिशा में महत्वपूर्ण साबित हो सकती है।

बढ़ते अपराध के पीछे सूचना संकलन की कमी?

पुराने 'खिलाड़ियों' को हटाया, नए चेहरों को इलाके की नब्ज समझने में लग रहा वक्त—क्या कमजोर हुआ पुलिस का इंटेलिजेंस नेटवर्क?

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। शहर में अपराध की घटनाओं को लेकर पुलिस की कार्रवाई लगातार सामने आ रही है, लेकिन इसी बीच एक अहम सवाल पुलिसिंग के उस हिस्से पर भी उठ रहा है, जो अपराध होने से पहले उसकी आहट पहचानने का काम करता है—सूचना संकलन तंत्र। पुलिस व्यवस्था में अपराध नियंत्रण केवल घटना के बाद कार्रवाई तक सीमित नहीं होता। किसी इलाके में कौन सक्रिय है, किन लोगों की गतिविधियां संदिग्ध हैं, कहां कौन-सा विवाद बढ़ रहा है, कौन-से पुराने अपराधी दोबारा सक्रिय हो रहे हैं और किन स्थानों पर गैरकानूनी गतिविधियों की संभावना है इन तमाम



जानकारियों का समय पर मिलना पुलिस की प्रभावी कार्रवाई के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। चर्चा यह है कि पिछले कुछ समय में सूचना संकलन से जुड़े पुराने और अनुभवी

चेहरों में बदलाव हुआ है। जिन लोगों को लंबे समय से अपने-अपने इलाकों, स्थानीय लोगों और संदिग्ध गतिविधियों की जानकारी थी, उनमें से कई को हटा दिया गया या उनकी

जिम्मेदारियां बदल दी गईं। उनकी जगह नए लोगों को जिम्मेदारी मिली है। नए लोगों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि इलाके की स्थानीय नब्ज समझने में समय लगता है। किसी थाने या क्षेत्र में तैनाती मिलते ही वहां के अपराधियों, पुराने विवादों, सक्रिय गिरोहों और स्थानीय समीकरणों की पूरी जानकारी तुरंत हासिल नहीं हो जाती। यही वह बिंदु है, जिस पर अब पुलिसिंग के जानकार सवाल उठा रहे हैं—क्या सूचना तंत्र में अनुभव की जगह केवल बदलाव को प्राथमिकता देना अपराध नियंत्रण के लिए नुकसानदेह साबित हो सकता है? हालांकि, यह कहना जल्दबाजी होगी कि अपराध

बढ़ने का एकमात्र कारण सूचना संकलन की कमजोरी है। अपराध बढ़ने के पीछे कई सामाजिक, आर्थिक और स्थानीय कारण हो सकते हैं। लेकिन यदि अपराध से पहले मिलने वाली सूचनाएं कमजोर पड़ती हैं, तो पुलिस की रोकथाम वाली रणनीति निश्चित रूप से प्रभावित हो सकती है। असली सवाल कार्रवाई का नहीं, 'पहले से जानकारी' का है पुलिस किसी अपराध के बाद आरोपी तक पहुंच जाए, यह उसकी कार्रवाई है। लेकिन अपराध होने से पहले संभावित घटना की जानकारी मिल जाए और उसे रोक लिया जाए—यही प्रभावी सूचना तंत्र की असली परीक्षा है। ऐसे

में सवाल यह भी है कि क्या नए सूचना तंत्र को पर्याप्त समय, संसाधन और स्थानीय नेटवर्क विकसित करने का अवसर मिल रहा है? क्या पुराने अनुभवी लोगों के अनुभव का इस्तेमाल नए लोगों को प्रशिक्षित करने में किया जा रहा है? अचलेश्वर एक्सप्रेस इस पूरे मुद्दे की पड़ताल अगले अंकों में करेगा—

कहां कमजोर हुई सूचना की कड़ी, किन क्षेत्रों में पुलिस को घटना के बाद जानकारी मिल रही है, पुराने सूचना नेटवर्क में क्या बदलाव हुए और नए तंत्र के सामने सबसे बड़ी चुनौतियां क्या हैं? अगले अंक में—'सूचना तंत्र के पुराने खिलाड़ी आखिर क्यों हुए किनारे?'